

डा० राम सुभग सिंह : अभी इसके बारे में तय नहीं हुआ है। जैसा कि सदन को विदित है, हर जगह करीब करीब यही कोशिश राज्य सरकारों की हो रही है कि व्यवस्थित रूप से वे अपने यहाँ बसेज को चलावें और जितनी ही उचित व्यवस्था होती जायगी उतना ही ऐसा करेंगे, हालांकि यह सही है कि कुछ प्राइवेट बसेज अच्छी तरह से चलती हैं लेकिन अभी उन सबों का टाइमटेबिल हम लोगों ने पब्लिश नहीं किया।

श्री राम सहाय : क्या मैं मंत्री महोदय से यह जान सकूंगा कि जहाँ एक रेलवे लाइन से दूसरी रेलवे लाइन पर जाना पड़ता है जैसे कि आगरा कैंट से आगरा फोर्ट या मद्रास में मद्रास सेंट्रल से एगमोर स्टेशन, उनके बीच में भी कुछ बस सर्विस का प्रबन्ध करने का क्या है।

डा० राम सुभग सिंह : असल में ऐसी जगहों में वहाँ स्थानीय बसेज हैं जैसे कि वहाँ मद्रास कारपोरेशन की या मद्रास गवर्नमेंट की चलती हैं और आगरा में भी यू० पी० की स्टेट बसेज चलती हैं इसलिये रेलवे को अलग से रखने की अभी कोई खास जरूरत महसूस नहीं हुई और महसूस होनी भी नहीं चाहिये क्योंकि उसको हैंडल करने में कुछ कठिनाई हो सकती है।

श्री राम सहाय : क्या मंत्री महोदय को यह मालूम है कि बस सर्विसेज जो हैं उनके साथ लगेज बिल्कुल भी नहीं ले जाया जा सकता है और इस वजह से उनमें कोई जा भी नहीं सकता।

डा० राम सुभग सिंह : यह मालूम है मगर और सवारियां हैं, रिक्शा वगैरह हैं और जिनके पास कुछ पैसे होते हैं उनके लिये टैक्सी वगैरह हैं और टांगे वगैरह मिलते हैं।

तो रेलवे अभी वैसी जगहों में बस चलाना चाहती नहीं।

केटरिंग स्टाफ के लिये ट्रेनिंग स्कूल

*440. श्री भगवती नारायण भागवत : क्या रेल मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि 31 मार्च, 1965 को समाप्त हुए वर्ष में किस-किस क्षेत्रीय रेलवे ने विभागीय रसोइयों, बरों और अन्य केटरिंग स्टाफ को प्रशिक्षण देने के लिये स्कूल खोले हैं और क्या गैर-सरकारी विक्रेताओं के केटरिंग स्टाफ को भी इन स्कूलों में प्रशिक्षण दिया जाता है ?

f [TRAINING SCHOOLS FOR CATERING STAFF

*440. SHRI B. N. BHARGAVA: Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state the zonal railways which have started schools for imparting training to departmental cooks, bearers and other catering staff during the year ended on 31st March, 1965 and whether the training is also imparted to the catering staff of the private vendors in these schools?]

रेलवे मंत्रालय में राज्य मंत्री (डा० राम सुभग सिंह) : प्रत्येक रेलवे पर खान-पान विभाग के कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने के लिए स्कूल खोलने का कोई प्रस्ताव नहीं है। लेकिन विभागीय खान-पान व्यवस्था के विभिन्न वर्गों के कर्मचारियों को इंस्टीट्यूट आफ केटरिंग टेकनॉलाजी एण्ड एप्लाइड न्यूट्रिशन, अंधेरी, बम्बई तथा औरंगाबाद रांची या पुरी के रेलवे होटलों और प्रत्येक रेलवे की चुनी हुई विभागीय खान-पान इकाइयों में प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की गयी है और इसका विस्तार किया जा रहा है। रेलवे के लिए यह व्यावहारिक नहीं कि वह खान-पान/खोमचे के ठेकेदारों के कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने का काम अपने हाथ में ले।

† [] English translation.

[THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (DR. RAM SUBHAG SINGH): There is no proposal to have a school for training catering staff on each railway. However, arrangements have been made and are being extended for imparting training to the different categories of departmental catering staff at the Institute of Catering Technology and Applied Nutrition Andheri, Bombay, the Railway Hotels at Aurangabad, Ranchi or Puri, and selected departmental catering units on each Railway. It is not feasible for the Railways to undertake giving of training to the staff of catering/vending contractors.]

श्री भगवत नारायण भार्गव : जिस प्रशिक्षण की ओर मंत्री महोदय ने इशारा किया है उस सम्बन्ध में मैं जानना चाहता हूँ कि सन् 1964-65 में कितने लोगों को प्रशिक्षण दिया गया और कितने समय तक दिया गया और उस पर कितना खर्चा हुआ ।

डा० राम सुभग सिंह : यह एक स्टेटमेंट है जो कि काफी लम्बा चौड़ा है और इसमें हर रेलवे के बारे में है । इसको मैं सदन के सभा-पटल पर रखने की अनुमति चाहूंगा ताकि पूरा विवरण मालूम हो जाय ।

श्री भगवत नारायण भार्गव : क्या आप खर्चा नहीं बता सकते ?

डा० राम सुभग सिंह : हर एक रेलवे की सारी बातें इसमें लिखी हुई हैं ।

श्री देवकीनन्दन नारायण : क्या मंत्री महोदय यह बतलाने की कृपा करेंगे कि आजकल डाइनिंग कोर्स में वेजेटेरियन और नान-वेजेटेरियन फूड एक ही चूल्हे पर करीब करीब एक ही बर्तनों में पकाया जाता है और इस विषय में बहुत से यात्रियों ने शिकायत भी की है और पार्लियामेंट के मेम्बरों ने भी आपके पास या आपसे पहले के जो मंत्री थे उनके पास एक शिकायत भेजी

† [] English translation.

थी । तो क्या मंत्री महोदय ऐसा आदेश देंगे कि इस तरह से एक ही चूल्हे पर और एक ही बर्तनों में दोनों न पकाये जायें और अलग अलग पकाये जायें ।

डा० राम सुभग सिंह : सामिप और निरामिप एक ही बर्तनों में नहीं बनाया जाता ।

श्री देवकीनन्दन नारायण : एक ही बर्तन में यानी वे ही बर्तन बदल बदल के रहते हैं ।

डा० राम सुभग सिंह : . . और न हम लोगों को अभी इसकी कोई सीधी शिकायत ही मिली है लेकिन अगर कहीं कोई ऐसी बात हुई हो तो उसकी देखरेख की जायगी । एक ही बर्तन में नहीं बनाया जायेगा । लेकिन एक ही चूल्हे वगैरह में बनाने की शायद इजाजत होनी चाहिये ।

DR. SHRIMATI PHULRENU GUHA: May I know how many persons are admitted in each course and whether any stipends are given to these people over and above their regular salaries?

DR. RAM SUBHAG SINGH: Yes, Sir. They do get their regular facilities. There are different categories of persons—Inspectors, Supervisors, Assistant Managers, cook V khansamas, etc.—and whoever goes there does enjoy his normal facilities.

SHRIMATI C. AMMANNA RAJA: May I know whether in this school cleanliness is also taught and also whether it is not a fact that the same caterer caters to both vegetarians and non-vegetarians one thali over another, both vegetarian and non-vegetarian thalis put together?

DR. RAM SUBHAG SINGH: Sir, we shall draw their attention, if it happens anywhere, that they should not put a vegetarian thali on a non-vegetarian thali but we think there should not be so much strictness that a caterer should not serve two types

of meals to different persons. However, we shall try to adjust according to the situation. Cleanliness is something which the Railways have to emphasise and we have been emphasising and we will do our best to improve upon it.

श्री बाबासाहेब सावनेकर : क्या मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि आजकल कैटीन में जो चाय पिलाई जाती है वह दुबारा उबाली जाती है और चपातियां जो दी जाती हैं वह मिक्सड आटे को दी जाती हैं और अगर मैनेजर को कम्प्लेंट की जाती है तो वह कहते हैं कि सरकार राशन ही ऐसा देती है, तो क्या इसके बारे में कोई शिकायत आपके पास आई हुई है या नहीं।

डा० राम सुभग सिंह : यह शिकायत तो नहीं लेकिन हम लोगों के पास यह सुझाव आया था कि गेहूं के आटे में ज्वार, बाजरा का आटा या ब्रेसन मिला कर रोटियां चलायें लेकिन अभी हम लोगों ने उसे माना नहीं इस लिये कि यात्रियों को कोई ऐसी बात हमारे पास तक नहीं पहुंची। लेकिन यह भी है कि रेलवे तो आटा पीसती नहीं है उसको जो सप्ताई विभाग से मिलता है उसी आटे को वह चलाती है लेकिन यह जरूर है कि गेहूं का जो आटा मिलता है उसकी व्यवस्था हम जोग अच्छी तरह से करें।

कुमारी सतिशेन वल्लभभाई पटेल : मैं यह जानना चाहती हूं कि आप को क्या तकलीफ है, मूसीबत है, कि नान वेजीटेरियन और वेजीटेरियन को अलग अलग पकाने का बंदोबस्त नहीं कर रहे हैं क्योंकि मैंने अपनी आंखों से देखा है कि टोस्ट के अंदर अंडे का छिलका निकला।

डा० राम सुभग सिंह : तकलीफ हमें कोई नहीं होनी चाहिये और अगर कहीं कोई गलती हुई है तो हम लोग गलती मानकर चलेंगे और उसका सुधार करेंगे और जहां यह चीज हुई है वहां उसकी ओर हम ध्यान आकियत कर देंगे अधिकारियों का, लेकिन

आम तौर से हम लोग भी मेम्बर की हैसियत से भी, साधारण यात्रो की हैसियत से भी, घूमते आये हैं और बचपन से घूमते हैं और हम को कोई दिक्कत नहीं हुई है। मगर जहां ऐसी दिक्कत आई हो वहां हम उसको आगे दूर कर देंगे।

SHRIMATI TARA RAMCHANDRA SATHE: At present they are putting the 'thalis' on the door at the entrance to the bogie. Will the Minister see that they attach one folding bench at the corridor so that they can put the 'thalis' and then they will be able to serve them?

DR. RAM SUBHAG SINGH: Our difficulty is that we are handling both the normal passenger traffic as well as the defence requirements and we are doing our best to meet the situation as suitably and effectively as possible and in the circumstances it is hardly possible to effect any further accommodation facilities. But we do not like that they should serve anything in a substandard manner. In the existing conditions we will do our best to meet the situation.

*441. [Transferred to the 3rd December, 1965.]

*442. [The questioner (Shri Babu-bhai M. Chinai) was absent. For answer, vide cols. 2682 infra.]

LICENCE TO M/S. A. H. WHEELER FOR BOOK STALLS ON RAILWAY STATIONS

*443. **SHRI DEOKINANDAN NARAYAN:** Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether it is a fact that M/s. A. H. Wheeler have got permanent licence for book stalls on many Rail way stations in the country;

(b) if not, for how many years they are given licence; and

(c) the conditions on which they are given licence?